डिस्कवरी, शनिवार १३ अक्टूबर २००७

राम सेतु है आपकी पहचान

मिट रही है अब वह पहचान

राम तो बसते हैं हमारे ह्रदय में – भला कौन मिटा सकता है उन्हें? सच कहा है आपने – राम हमारे अस्तित्व में समाए हुए हैं – किसकी मजाल जो उन्हें मिटा दे हमारी यादों से? बड़ी प्यारी लगती हैं ऐसी भावनाएँ। पर इसे एक दूसरे ढंग से सोचकर देखिए। कब तक रहेगा आपका यह नश्वर शरीर? एक दिन तो मिटना ही है न इसे। जब शरीर न रहेगा तो आपकी यादें न रहेंगी। तब क्या होगा? आप कहेंगे – मैं न रहा तो क्या हुआ, मेरे भाई-बन्द तो हैं न? जिएगा उनके साथ राम नाम की अमिट याद। हाँ, यह भी सुनने में बड़ा अच्छा लगता है। पर कब तक? कब तक जीयेंगे आपके ये भाई-बन्द? उनके बाद क्या होगा? आप कहेगे – क्यों, हमारी पुश्तें खतम हो गईं क्या? हमारे बेटे-बेटियाँ हैं न, वे ले चलेंगे राम नाम की हमारी धरोहर अपने साथ – हजारों वर्षों से वंश-परंपरा के साथ चली आ रही है ये यादें – यवन आए पर मिटा न पाए राम के अस्तित्व को चाहे हमारा अस्तित्व क्यों न मिट जाए! अच्छा, तो आपको भरोसा है अपने बेटे-बेटियों पर? चलिए पहले बेटियो की बात करते हैं फिर बेटों पर आएंगे। जरा अपने चारों तरफ नजर घुमा कर देखिए – कितनों की बेटियाँ आज प्रेम-विवाह कर रही हैं ईसाइयों और मुसलमानों से। उसके बाद? जरा खोजबीन कीजिए – आप पाएंगे कि विवाह के समय अथवा कुछ समय के पश्चात वे, स्वेच्छा से या फिर मजबूरी में, अपने पति का धर्म स्वीकार कर रही हैं। आप कहेंगे – हो रहा होगा, पर हमारे साथ ऐसा न होगा, हमने उन्हें संस्कार ही ऐसे दिए हैं। आहा, इस धोखे में न रहिए, हो सकता है अभी आपकी बेटियों के पर न निकले हों, पर जब निकलेंगे तो चिड़िया उड़ जाएगी और आप हाथ मलते रह जाएंगे! यह केवल शर्मिला के साथ ही न हुआ कि जब उसने पटौदी से शादी की तो इस्लाम अपनाया और फिर सैफ अली खान व सोहा अली खान को जना। इन्दिरा ने जब इंग्लैंड[१] में फिरोज से शादी की तो इस्लाम अपनाया[२] और भारत लौटकर मोहनदास करमचन्द की सलाह एवं जवाहरलाल के आदेश पर फिरोज[३] ने अदालत में शपथपत्र (ऐफिडेविट) दाखिल कर अपना पारिवारिक मुसलमान[४] नाम बदलकर गाँधी नाम अपनाया और फिर दोनो नें देशवासियों को दिखाने के लिए हिंदू रीति से शादी का नाटक किया। और किसके दबाव में आकर उन दोनों ने यह जग-दिखावा किया? उसी जवाहरलाल के जो यह कहने में गर्व अनुभव करता था कि मैं शिक्षा से ईसाई, सोच से मुसलमान और दुर्घटना से हिन्दू हूँ! और यह सब किसकी सलाह पर किया? उसी सत्य के अवतार मोहनदास की सलाह पर जिसने जेल में बैठकर जगप्रसिद्ध आत्मकथा लिखी *माई एक्सपेरिमेन्ट विथ ट्रुथ*! इन बड़े-बड़े लोगों में से कुछ ने जग को जताकर और कुछ ने लुकछुपकर बड़े-बड़े दृष्टांत रखे और हम छोटे-छोटे लोग उन्हीं के पदचिन्हों के पीछे चलते जा रहे हैं। खैर यह तो हुई संभ्रांत परिवार के एवं साधारण परिवार की बेटियों के संबंध में। बेटियों के द्वारा तो वैसे भी वंश नहीं चलता अतः मुहम्मद और ईसा को अपनाए हुए उनके वंशज आगे चलकर श्रीराम की कब्र खोदने में ही जुटेंगे। अब रही बात आपके बेटों की जिनसे आपको बड़ी आशाएँ हैं, यह सोचकर कि वे आपके वंश की डोर को लेकर आगे चलेंगे, और मिटने न देंगे आपकी पहचान इस धरती से चाहे आपका यह नश्वर शरीर क्यों न विदा ले ले। पर क्या आपको भरोसा है कि आपके बेटे ईसाई या मुस्लिम लड़की से प्रेमविवाह नहीं करेंगे? और यदि किया भी तो क्या आपको पूरा भरोसा है कि वे अपनी पत्नियों को हिन्दू बना लेंगे? अव्वल तो यह होगा नहीं, क्योंकि उन्हें सिखाया ही जाता है कि सभी धर्म समान हैं और सभी धर्म उसी एक-ही ईश्वर की ओर हम सभी को ले जाते हैं। अतः स्वाभाविक है कि आपके बेटे को इस बात की आवश्यकता ही महसूस न होगी कि उसे अपनी पत्नी से धर्मपरिवर्तन कर हिंदू बनने का आग्रह करना चाहिए। मान लो कि उसने ऐसा आग्रह किया भी तो उसकी पत्नी – जिसने बचपन से हिंदू को एक मूर्तिपूजक एवं ईश्वरीय ज्ञान के संदर्भ में एक दिशाहीन के रूप में जानना सीखा

है – ऐसी पत्नी इंकार भी तो कर सकती है। उस स्थिति में आपका बेटा क्या करेगा? वही जो आप करते आए हैं – कोई सच्चाई यदि अप्रिय दिखने लगे तो उसे देखो मत, सुनो मत, कहो मत! एक महान आत्मा हुआ करते थे जिनकी मैं बड़ी इज्जत किया करता था क्योंकि उनकी कथनी और करनी में कितना बड़ा फासला था इसका मुझे गुमान तक न था। उन महान आत्मा के पास तीन बन्दर हुआ करते थे। एक की आँखों पर पट्टी बँधी हुआ करती थी – यदि उसे कुछ अप्रिय नजर आता तो वह उस ओर देखता ही नहीं – वह कुछ ऐसा सोचता था कि जिसे 'मैंने' देखा नहीं वह सच हो नहीं सकता। दूसरे बन्दर ने अपने कानों को ढक रखा था – कुछ भी अप्रिय होता तो उसे वह सुनना नहीं पसंद करता था – उसका ऐसा सोचना था कि जिसे 'मैंने' सुना नहीं वह सच हो नहीं सकता। तीसरे बन्दर ने अपने मुँह पर पट्टी बाँध रखी थी – यदि उसे किसी अप्रिय बात का ज्ञान होता भी तो वह उसे किसी से कहता नहीं – उसकी सोच कुछ यों थी कि यदि मैं इसे जानता भी हूँ तो मैं किसी से भला क्यों कहूँ और कहकर बुरा बन जाऊँ – और यदि मैं वह अप्रिय सत्य किसी से कहता नहीं तो कोई उसे जान पाता नहीं – और जब कोई उसे जानता नहीं तो वह सच हो ही कैसे सकता? इन तीन बन्दरों की कहानी बचपन से हर किताब में पढ़ते-पढ़ते हमारी सोच उसी रंग में इतनी रंग चुकी है कि बस हम भी ठीक वैसे बन्दर ही बनकर रह गए हैं। इस प्रकार आपके वंशज और उनके वंशज भी उसी प्रकार के बन्दर ही होंगे जो हर अप्रिय सत्य से सदा दूर भागेंगे। एक संभावना और है – यदि आपके बेटे की शिक्षा-दीक्षा ईसाई स्कूल में हुई हो – जैसा कि अधिकांशतः हिंदू बच्चों का आज होता है क्योंकि आप चाहते हैं कि तरक्की करने के लिए आपके बेटे का अंग्रेजी पर अधिकार हो – अंग्रेज पर नहीं क्योंकि वह तो आपकी पहुंच से बाहर है – तो आपका वह ईसाई स्कूल में अंग्रेजी पढ़ा-लिखा बेटा अपनी पत्नी को हिंदू बनाने के बजाय स्वयं ईसाई बन जाना पसंद करेगा – क्योंकि उसे शांतिमय सहवास (पीसफुल कोएक्जिस्टेन्स) पसंद है। राजीव भी तो बने थे जब सोनिया से प्रेमविवाह किया और फिर सोनिया ने जन्म दिया दो बच्चों को – दोनों जन्म से ईसाई, उनके पासपोर्ट पर उनका ईसाई नाम, बेटी व्याही गई एक ईसाई से और बच्चे को जनने के बाद जब अस्पताल से छूटी तो सबसे पहले गई चर्च में माथा नवाने – बेटे की भी प्रेमिका ईसाई। ये तो झलकियाँ हैं, खोजेंगे तो ढेरों मिलेंगे ऐसे नमूने। सवाल अपने-आप से पूछें कि क्या आपको अब भी भरोसा है कि आपकी संताने आपकी धरोहर को जिन्दा रखेंगी, आपकी पहचान को लेकर ही आगे बढ़ेंगी, या फिर समय की गुमनामी में खो जाएगी आपकी रही-सही पहचान भी। जब आपके पहचान की ही फिकर न होगी उन्हें तो फिर आपके रामजी की पहचान से भला क्या मतलब होगा उन्हें? आपको लग रहा होगा कि बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बोल रहा हूँ मैं – आपको पूरा भरोसा है कि आपके बच्चे आपको नहीं भूलेंगे। ठीक है, उनके बच्चों के बारे में सोचिए, उनके बच्चों के बच्चों के बारे में सोचिए, उनके बच्चों के बच्चों के बच्चों के बारे में सोचिए – ठीक से सोचकर देखिए क्या वे आपकी तस्वीर को भी पहचान सकेंगे? यदि आपको उत्तर मिलता है नहीं, तो फिर अगला सवाल अपने-आपसे पूछिए – क्या आपके हृदय में बसे श्रीराम की तस्वीर को वे पहचानेंगे? तब कहाँ होगी आपकी संस्कृति, कहाँ होगी स्मृतियाँ? उन्हें याद दिलाने के लिए क्या बचा रहेगा? आज भी बचा है एक राम सेतु जिसे बड़े श्रम से, बड़ी लगन से, गभीर श्रद्धा के साथ रामभक्त वानरों ने तब बनाया था जिस समय की गणना[५] तक हमारे पास नहीं – पर वह राम सेतु आज भी अपनी जगह पर टिका हुआ है हमें यह याद दिलाने कि जब आसुरिक शक्तियाँ इतनी बलवान हो जाएँ कि धरती कराह उठे तब होता है आगमन मानव रूप धर श्रीनारायाण का इस धरा पर। समय धीरे-धीरे उसी ओर बढ़ रहा है – हिंदू वोट एवं आर-एस-एस[६] अभियान के सहारे सत्ता में पहुँची अटल बिहारी[७] सरकार ने नींव रखी[८] इस झमेले की और हिंदुओं की लात खाने के बाद जब वह सरकार गिरी तो सोनिया के तथाकथित बलिदान के आधार पर बिन-रीढ़ के एवं मार्क्ससिस्ट मन को मोहने वाले की जो त्रिशंकु सरकार बनी तो उसने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया राम सेतु को तोड़ने के लिए। किसीने प्रकृति के संकेतों को नहीं पढ़ा – प्लानिंग (योजना निर्माण की क्रिया) आगे बढ़ी और सुनामी आया, तबाही मचाई और इस बात के स्पष्ट संकेत देकर गई कि सारी योजना को एकबार फिर से देखो, नए सिरे से विचार करो, तुम्हें नए दृष्टिकोण

मिलेंगे। पर ईसाइयों की दुनिया ने तो कभी भी प्रकृति को आदर की दृष्टि से देखना सीखा ही नहीं – वे मूर्ख तो प्रकृति पर विजय पाने के सपने देखते हैं – छोटी-छोटी विजयों पर फूले नहीं समाते – यहाँ तक कि कार्टिना से भी कुछ नहीं सीखते जहाँ अमरीका की सर्वशक्तिमान सरकार भी देखती ही रह गई, कुछ कर न सकी। ईसाई धर्म ही उन्हें यह मूर्खतापूर्ण सीख देता है कि ईसाइयों के गॉड ने ईसाइयों को बनाया ही है इसलिए कि वे इस धरती को भोगें और उस पर राज करें – वे यह नहीं जानते कि जब अति हो जाएगी और प्रकृति को रोष आयेगा उस दिन पलक झपते ईसाइयों की दुनिया को मिटाकर चला जाएगा – कार्टिना तो झलकी मात्र था। खैर सेतुसमुद्रम परियोजना के अंतर्गत सेतुबन्ध रामेश्वर को तोड़ने का कार्य जैसे-जैसे आगे बढ़ता गया वैसे-वैसे और भी अड़चनें आती गईं – मशीनें टूटती गईं, और शक्तिशाली मशीनें आती गईं और टूटती गईं। पर यह मत सोचिए कि उनके तोड़-फोड़ का काम आगे नहीं बढ़ा। आइए देखें उन्होंने कितनी तरक्की की है अपनी इस कोशिश में। यह जानना आपके लिए बहुत जरूरी है – आपको जानना है कि अभी आपके लिए आराम करने का समय नहीं आया है। सरकारी आँकड़ों[९] के अनुसार २८ जुलाई २००७ तक रामसेतु का १७.५७ प्रतिशत तोड़ दिया गया था। एक महीने बाद २७ अगस्त को यह प्रतिशत बढ़कर २२.५३ हो गया। अगले पंद्रह दिनों में उन्होंने इस विनाश की प्रक्रिया को २४.४७ प्रतिशत[१०] तक पहुँचा दिया। जब भी कोई दंगा होता है, या दुर्घटना होती है या बम फूटता है या फिर पुलिस गोली चलाती है – हर हालत में आपने देखा होगा कि सरकारी आँकड़े सदा वास्तविकता से कम होते हैं – इन सभी स्थितियों में सरकार दिखाना चाहती कि जानमाल की क्षति जितनी वास्तव में हुई है, उससे कम ही हुई है क्योंकि कम दिखाना उनके हित में होता है। अब यहाँ जब सरकार हिंदुओं के पूज्य श्रीराम की धरोहर को मिटा देने पर तुली है तो उसकी प्रगति को कम से कम आँक कर दिखाने में ही सरकार का हित है। अतः यह भी संभव है कि काम जितना दिखाया जा रहा है उससे कहीं अधिक उन्होंने नष्ट कर दिया हो। खैर जो भी हो हमारे पास इससे बेहतर विकल्प नहीं है अतः हमें सरकारी आँकड़ों के आधार पर ही अपने निष्कर्ष निकालने होंगे। तो हम देखते हैं कि अगस्त के एक महीने में उन्होंने रामसेतु को ५ प्रतिशत तोड़ा और अगले पंद्रह दिनों में २ प्रतिशत। अबतक वे रामसेतु का एक-चौथाई हिस्सा तोड़ चुके हैं और यदि इसी रफ्तार से लगे रहे तो संभव है कि पंद्रह महीनों में रामसेतु का अस्तित्व मिटाकर रख दें। देखा जाए तो अगले चुनाव के पहले सोनिया के पास वे पंद्रह महीने तो हैं ही। रामजी की दया से और आपलोगों की चेष्टा से इतना तो हुआ है कि इन दिनों तोड़-फोड़ की गति कुछ कम हो गई है। सरकारी वेबसाइट हमें यह भी बताता है कि अगस्त के महीने में ५ प्रतिशत, सितंबर के पहले दो सप्ताह में २ प्रतिशत, एवं तीसरे सप्ताह में १/४ प्रतिशत तोड़-फोड़ हुई – अर्थात गति क्रमशः धीमी होती गई। अगले तीन हफ्तों के बारे कोई आँकड़ा नहीं दिया गया है – इसका मतलब हो सकता कि काम ठप्प है या फिर चोरी-छुपे जारी है पर हिंदुओं के मन की शांति के लिए आँकड़े दिखाए नहीं जा रहे हैं। जो भी है हमें बहुत कुछ करना है तब तक जबतक सोनिया सरकार इस तोड़फोड़ की प्रक्रिया को हमेशा के लिए खत्म नहीं कर देती है। इसके सिवा आपको एक और महत्वपूर्ण बात पर गौर करना होगा कि अब तक जो एक-चौथाई (२४.७६ प्रतिशत)[११] तोड़ दिया गया है इसकी भरपाई कौन करेगा? न्याय हो तो पूरा होना चाहिए अन्यथा हम यदि ''जो हो गया है सो हो गया है उसे भूल जाओ'' की प्रवृत्ति लेकर चलेंगे तो कल फिर कोई मौका देखकर अगली एक-चौथाई तोड़ देगा इसके पहले कि हम कुछ कर सकें। ऐसा करते-करते अगले बीस-पचीस सालों में पूरा तोड़ दिया जाएगा। अभी हिंदू थोड़े जोश में है, कल ठंडा पड़ जाएगा। आने वाले दिनों में आपकी अंग्रेजी पढ़ी लिखी संताने आवाज भी ज्यादा नहीं करेंगी – कारण मैं आपको इस लेख के आरंभ में ही बता चुका हूँ।

अब चलते हैं इस विषय के एक अन्य पहलू पर जो किसी जासूसी उपन्यास से कम रोचक नहीं है। अबतक हमने सोनिया की बात की पर जैसे हमारे छोटे-से मार्क्ससिस्ट सरदारजी सोनिया के हाथों में कठपुतली हैं, वैसे हमारी सोनिया मैडम भी किसी के हाथों की कठपुतली हैं। उसकी चाबी किसके हाथ में है इसे समझने के लिए एक बहुत बड़े अंतर्राष्ट्रीय खेल को समझना होगा। पर उस खेल की बात शुरु करेंगे तो

इस छोटे से लेख में उसकी रूपरेखा तक न समा पाएगी। नाटक में अनेक बार परदा गिरता है। हम यहाँ पर, शुरु से नहीं बल्कि बीच में कहीं से भी, एक पर्दा उठा कर उस हिस्से को देख लेते हैं। बाकी फिर कभी जब समय मिलेगा – और मैं जानता हूँ कि वह समय भी बहुत लंबे समय के बाद आएगा (इतना काम अटका पड़ा है हाथ में)। आज इतना हो गया क्योंकि सब काम छोड़कर इसी में जुटा रहा पर अब बहुत थक गया हूँ – बाकी कल देखेंगे अगर इसी विषय पर काम करने का मूड रहा तो ...

---

[१] लंदन के एक मस्जिद में (१९४१) (संदर्भ आर वी भसीन, ऐडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, आइ-एस-बी-एन ८१-६७४०५-०४-एक्स)

[२] इंदिरा बनी मेंनुना बेगम (१९४१) (संदर्भ R V Bhaseen Advocate Supreme Court ISBN 81-67405-04-X 11.10.2005)

[३] फिरोज खान पुत्र नवाब खान (संदर्भ A Tale of Two Lals-Motilal & Jawahar Lal by R V Bhaseen ISBN 81-67405-04-X)

[4] मृत्यु के पश्चात फिरोज को इलाहाबाद के एक मुस्लिम कब्रिस्तान में दफनाया गया (संदर्भ R V Bhaseen ISBN 81-67405-04-X)

[5] कहते हैं कि कोई १७ से साढ़े १७ लाख वर्ष पहले रामसेतु बना था पर उस पर भी उंगली उठाने वाले बहुत हैं

[६] जिसके सरसंघचालक ने भगवान श्रीकृष्ण और मुहम्मद को एक तराजू में तौला (अजमेर की जनसभा में) जो हिंदू समाज के प्रति उनकी छिछली निष्ठा एवं मुस्लिम चाटुकारिता की ओर संकेत करता है (संदर्भ Hindu Voice, some old issue has full details)

[७] उसी नेहरु-प्रेमी अटल बिहारी एवं नई-नई बनी जनता सरकार के दबाव में आकर, आर-एस-एस अपने संविधान से हिंदू शब्द को निकाल फेंकने के प्रस्ताव पर विचार करने को राजी हो गई थी, पर उस महत्वपूर्ण बैठक के पहले यदि जनता सरकार गिर न गई होती तो आज आर-एस-एस के संविधान में हिंदू शब्द होता भी, कि नहीं, कोई नहीं जानता (संदर्भ - Hindu Temples–What happened to them? Volume II p 407 Sita Ram Goel Voice of India New Delhi ISBN 81-85990-03-4)

टिप्पणी - इतना अंदाज अवश्य लगाया जा सकता है कि तब से आर-एस-एस जैसे महत्वपूर्ण संघठन के ऊपरी तबके में कैसा घुन लगना शुरु हो गया था। अटल बिहारी जैसा व्यक्ति जो आर-एस-एस जैसे संगठन को अ-हिंदू संगठन बनाने पर तुला हुआ था, वैसा व्यक्ति भारत में हिंदू हितों को कौन सी दिशा देने जा रहा था, यह बात किसी भी दूरदर्शी पर्यवेक्षक की समझ में आनी चाहिए थी, पर आर-एस-एस के दिग्गजों को इस खतरे का भान न हुआ, या फिर हुआ पर उन्होंने जानबूझ कर आँखें मूँदी, और अटल बिहारी जैसे खोटे घोड़े पर अब तक दाँव लगाते रहे।

मैं यह भली-भाँति जानता हूँ कि मेरी ये टिप्पणियाँ आर-एस-एस के अनुयायियों में मेरे प्रति रोष की भावना पैदा करेगा। दूसरी ओर कुछ हिंदू–प्रेमी मुझसे कहेंगे कि मेरा ऐसा कहना हिंदुओं में दरार को बढ़ाएगा जबकि आज हिंदुओं में एक-जुट होने की आवश्यकता है। आर-एस-एस के अनुयायियों के रोष एवं ऐसे हिंदू-प्रेमियों की सलाह को सुनकर यदि मैं इन जानकारियों पर पर्दा डाले रखता हूँ तो क्या होगा – (१) साधारण हिंदू इन बातों से बेखबर रहेगा (२) आर-एस-एस के अनुयायी मेरे साथी बने रहेंगे। पर कब तक वे मेरा साथ देंगे? क्या तब भी वे मेरा साथ देंगे जब मैं उन्हें सत्य एवं असत्य, धर्म एवं अधर्म के बीच किसी एक को चुनने के लिए कहूँगा? क्या तब उनमें वह सत्साहस होगा? आज स्थिति सहज है, आगे और भी कठिन दिन आने वाले हैं – तब विकल्प बहुत कठिन होंगे और समय बहुत अधिक बलिदान की माँग करेगा। क्या तब वे सत्य एवं धर्म के पक्ष में खड़े हो पायेंगे? जिनमें आज की सहज स्थिति में सत्य एवं धर्म के पक्ष में खड़े होने की क्षमता नहीं है, कल की विषम स्थिति में वे क्या करेंगे? उत्तर सहज है – भाग खड़े होंगे। जब हमें उनके साथ की सबसे अधिक आवश्यकता होगी तब वे हमें मझधार में छोड़ देंगे। क्या यह बेहतर नहीं कि उनका साथ अभी छूट जाए ताकि हम उनपर निर्भरशील तो न बनें। ऐसा साथी किस काम का जिसमें अंत तक साथ निभाने की क्षमता नहीं? एक बात स्पष्ट रूप से जान लीजिए – बैसाखियों के सहारे कभी लम्बी डगर पार नहीं की जा सकती। इसलिए बैसाखियों को जितनी जल्दी छोड़ देंगे और अपने पाँवों पर खड़ा होना सीख लेंगे, सच्चे हिंदू के लिए उतना ही अच्छा होगा। ये तर्क जो मैंने यहाँ आपके सामने आर-एस-एस के संदर्भ में रखे हैं, वही तर्क उन संगठनों के बारे में भी लागू होते हैं जिनका जिक्र मैने अपनी पिछली दो पुस्तकों में (*कौन अपना कौन पराया* एवं *सिक्के का दूसरा पहलू*) किया है।

[8] सन २००२ में स्थापना हुई *सेतुसमुद्रम कॉर्पोरेशन लिमिटेड* की (संदर्भ SSCP–A monumnet of fraud and infamy by V Sundaram p 5 May 2007 issue of Bharatiya Pragna Hydrabad RNI No. 71764/99 Editor Publisher Dr T H Chowdary)

[9] http://sethusamudram.gov.in/projectstatus.asp

[10] सनातन प्रभात अक्टूबर २००७ पृष्ठ ३ एवं http://www.hindujagruti.org/

[11] http://sethusamudram.gov.in/projectstatus.asp [as of 13 Oct 2007]